INDEXED, PEER-REVIEWED / REFEREED JOURNAL

PUNE RESEARCH TIMES

AN INTERNATIONAL JOURNAL OF CONTEMPORARY STUDIES

CERTIFICATE

This is to certify that Mr. / Ms./ Dr. / Prof. डॉ मंजूर चाँदभाई सैय्यद & श्री. नितीन दत्तात्रेय पंडित has / have Published a Paper entitled- शांताकुमार के उपन्यासों में पारिवारिक संघर्ष in PUNE RESEARCH TIMES An International Journal In Contemporary Studies (ISSN 2456-0960) VOLUME 5, ISSUE 1 (JAN – MAR 2020) Journal Impact Factor 3.18 (IIJIF)

Sonali S. Shete
Managing Director

Dr. Yogesh Maishette
Editor-in-Chief

editorpu[illegible]research.com/times + 91- [illegible]03981666

PUNE RESEARCH TIMES ISSN 2456-0960
AN INTERNATIONAL JOURNAL OF CONTEMPORARY STUDIES VOL 5, ISSUE I

शांताकुमार के उपन्यासों में पारिवारिक संघर्ष

डॉ. मंजूर चाँदभाई सैय्यद
(हिन्दी विभाग)
सावित्रीबाई फुले, पुणे विश्वविद्यालय पुणे
(महाराष्ट्र) भारत

श्री. नितीन दत्तात्रेय पंडित
शोध छात्र (हिन्दी विभाग)
सावित्रीबाई फुले, पुणे विश्वविद्यालय पुणे
(महाराष्ट्र) भारत

सजीव प्राणी और मनुष्य अपने जीवन में हर पल संघर्ष करते रहते है। जीवन रुपी सागर में अपनी नौका को पार लगाने के लिए वह सामाजिक, पारिवारिक, राजनीतिक, आर्थिक आदि स्थितियों में संघर्ष करना ही होता है। संघर्ष एक सामाजिक प्रकिया है। जो सभी व्यक्ति एवं समाज में द्रष्टव्य है। इस प्रकिया में व्यक्ति और समूह, किसी सार्थक उद्देश की प्राप्ति के लिए दूसरे को रोकने का सफल, असफल प्रयत्न करते है। प्राणी एवं पंछी अपने जीवन जीने हेतु अथवा अपनी रक्षा (अस्तित्व) के लिए संघर्ष करते हैं। वास्तविक पारिवारीक संघर्ष सामाजीक प्रकिया है जिसमें दो व्यक्ती या अधिक व्यक्तीयों का समूह अपने अस्तित्व हेतु संघर्षरत रहता है वह संघर्ष अनेकानेक प्रकरके होते है।

साहित्य में मानव जीवन का लेखा जोखा साहित्यकार चित्रित करता है। साहित्य समाज का दर्पण होने के कारण उसमें मानव के संघर्ष का वर्णन होता है। हिमाचल प्रदेश के भूतपूर्व मुख्यमंत्री एवं सुप्रसिध्द साहित्यकार शांताकुमार के उपन्यासों में पारिवारिक संघर्ष का अनुसंधान करते हुए प्रथमतः संघर्ष का अर्थ एंव परिभाषा जानना आवश्यक है।

नालन्दा विशाल शब्द सागर में संघर्ष का अर्थ – "रगड़ खना। रगड़ा, हिस्सा, प्रतियोगिता अथवा एक वस्तु की दूसरी वस्तु के साथ होनेवानी रगड़ा। फिक्शन। दो दलों में होनेवाला वह विरोध जिसमें दोनों एक दूसरे को दबाने का प्रयत्न करते हैं।"[1]

ऐसा प्राप्त हुआ है। शोधगंगा में संघर्ष का अर्थ. "बिकट और विपरीत परिस्थितियो से निकलकर आगे बढने के लिए होनेवाला प्रयास या प्रयत्न।"[2]

कोई चीज घिसने, घोटने या रगड़ने की किया इस आधार पर किसी विपरीत परिस्थिति में अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रयास करना लढना अथवा आनेवाली समस्याओं को दूर करना। आदि के व्दारा यह प्रक्रिया होती है।

संघर्ष की परिभाषा अनेक विव्दानों ने की है। उसमें से एक दो देखेगें मेक्स बेबर के अनुसार "सामाजिक जीवन से हम संघर्ष को अलग नहीं कर सकते। हम जिसे शांति कहते है। वह और कुछ नहीं है अपितु संघर्ष के प्रकार का उद्देश्य तथा विरोधी में परिवर्तन।"[3] रॉबिन विलियम्स के अनुसार "किसी भी परिस्थिति में हिंसा पुर्ण रुप से उपस्थित या अनुपस्थित नहीं हो सकती।"[4]

तात्पर्य यह होता है कि संघर्ष के बिना सामाजिक जीवन असंभव है। परिवार का अर्थ – "किसी राजा या रईस के साथ उसको लेकर चलनेवाले लोग, परिषद, कुटुंब, खानदान, बालबच्चे, कुल, जाति, वंश आदि होता है"।[5]

अर्थात परिवार का अर्थ किसी विशेष जाति एंव समुह, कुटुंब, खानदान अथवा किसी कुल के लोग अथवा वंश के लोग होता है। इससे परिवारिक संघर्ष का अर्थ परिवार में वंश में अथवा कुल में पति–पत्नी बालबच्चों तथा अन्य सदस्य के लिए एवं साथ आनेवाली समस्याओं का सामना करना, समस्याओं से लढ़ना यही होता है।

शांताकुमार के उपन्यासों का अध्ययन करते समय पारिवारिक संघर्ष अनन्य प्रसंगो में दृष्टिगत है। शांताकुमार का जीवनही संघर्षमय रहा है। वह अनेक प्रकार की विपरित परिस्थिति से लढ़कर अपने जीवन में आनेवाले कठिनाईयों को नींव बनाकर आप सफलता पूर्ण राजनेता एवं साहित्यकार का जीवन प्राप्त किया है। इस दृष्टि से उपन्यास 'मृगतृष्णा', 'कैदी', 'लाजो', 'मन के मीत', 'वृंदा' आदि है हर उपन्यास में संघर्ष द्रष्यव्य होता है। जहॉ मानव जीवन है वहॉ संघर्ष रहता है। महाराष्ट्र के संत समर्थ रामदास स्वामी का कथन है।

"जगी सर्व सुखी असा कोण आहे ? विचारी मना तुच शोधूनी पाहे"।[6]

अर्थात विश्व में सारे सुख प्राप्त करने वाला एवं ऐसा कोई भी मनुष्य नहीं जिसे समस्या एवं दुःख नहीं है।

शांताकुमार के 'मृगतृष्णा' में प्रमोद ओर सावित्री नामक नायिका है इनका पारिवारीक संघर्ष चित्रित हुआ है। प्रारंभ में प्रमोद अपने पिता अपनी बहनों को (परिवार) को छोडकर चंदीगड से हिमाचल प्रदेश में मंडी शहर में पुलिस अधिकारी की नोकरी के लिए आता है वहॉं अपने परिवार से बिछड़कर अपरिचित स्थान में नोकरी करता है। उसपर अच्छे संस्कारों के कारण ईमानदारी से नोकरी करते हुए राजनीतिक छत्रछाया प्राप्त पुलिसवाला सिपाही खुशहाल जो शराब पीकर जनता को तकलिफ देता है, मारता है, डयुटीपर शराब पिकर आता है, उसे जेल में बंदी बनाता है। इसलिए प्रमोद को अनेक समस्याओं का सामना करना पडता है। उसका तबादला काजा के लिए किया जाता है। प्रमोद को प्रेमिका सावित्री है दोनों का मिलना, विवाह होना, विवाह के पश्चात प्रमोद का पुलिस की नोकरी छोड़कर फौज में भर्ती होता है वहॉं के अधिकारी किशोर के साथ मिलकर सेना के खाने की सामग्री का सप्लाय करते है। इस समय प्रमोद आधिक शराब पीने लगा। पार्टियों में जाने लगा ताश तथा जुऑं खेलता है। उसके दोस्त उसे सावित्री को भी पार्टियों में लाने लगा को कहते है किंतु सावित्री को दूसरे मर्दो के साथ नाचना। एवं पार्टियों में अच्छा नहीं लगता वह उसे समझाती है। किंतु प्रमोद नहीं मानता दिन रात जुऑं एंव शराब में रहने के कारण सारी तनखाह वही पर समाप्त हो जाती है वह कर्ज भी लेता है। किशोर और प्रमोद दोनों मिलकर सेना के कोश मेमं गबन करते है और पकड़े जाते है। प्रमोद और किशोर जेल में बंदी बनाया जाता है। इस बीच सावित्री परिवार को चलाने के लिए संघर्ष करती है बेटीयॉं भी मॉं के साथ ही है। सावित्री सारे जेवर एवं धन देकर प्रमोद को छुडाने के लिए संघर्ष करती है किंतु सारे सबूत और गवाह प्रमोद के खिलाफ होने के कारण उसे सजा होती है। सावित्री परिवार चलाने के लिए नोकरी करती है। अपनी बडी बेटी की शादी करती है, किंतु ऋतु अपने पिता के रास्ते चलती है। वह गुरुचरण नामक राजनेता के पिछे लगकर अपना घरबार छोड़कर उसके साथ रहती है घुमती है और जब गर्भवती होती है। तो गुरुचरण उसे गर्भ गिराने को कहता है लेकिन वह नहीं मानती गुरुचरण धोखे से उसकी हत्या कर देता है। सावित्री अपने बेटी के हत्यारे को सजा देने के लिए तथा न्याय प्राप्ति के लिए सभी तरफ घुमती है। अंत में वह प्रधानमंत्री से मिलने तथा न्याय प्राप्ति के लिए सभी तरफ घुमती है। अंत में वह प्रधानमंत्री से मिलने तथा न्याय प्राप्ति के लिए दिल्ली आती है। लेकिन

गुरुचरण के इशारों के कारण उसकी प्रधानमंत्री से मिलने तथा न्याय प्राप्ति के लिए दिल्ली आती है। लेकिन गुरुचरण के इशारों के कारण उसकी प्रधानमंत्री से भेट नहीं होती, न्याय नहीं मिलता वहाँ के चौकीदार उसे गालियाँ देकर निकाल देते है। दूसरे दिन सावित्री न्याय न मिलने के कारण आत्महत्या कर लेती है। प्रमोद भी यह खबर सुनकर पागल हो जाता है उसे पागल खाने भेज दिया जाता है। यहाँ प्रमोद और सावित्री के पारिवारिक संघर्ष सामने आता है साथ ही साथ रितु का भी पारिवारिक संघर्ष है वह अपने पति से अलग हुई है क्योंकि उसे अनेक बातों से संघर्ष पडा है वह अपनी सुंदरता शरीर एवं यौंवन का प्रयोग करते हुय राजनिति में अपनी जगह कायम करती है। किशोर अपने परिवार एवं पत्नी को खुशियों के लिए कमाता है और अंत में जेल जाता है। सावित्री उसकी पत्नी साराधन जेवर लेकर अपने पुराने मित्र के साथ बम्बई चली जाती है और तलाके के कागजाद किशोर को भेज देती है। अंत में किशोर भी पागल हो जाता है। इस तरह 'मृगतृष्णा' में पारिवारिक संघर्ष द्रष्यव्य होता है।

'मन के मीत' यह मनोवैज्ञानकि उपन्यास है। इसमें दो कथाओं का चित्रण हुआ हैं। गीता–रामसिंग इनका पारिवारिक संघर्ष रामसिंह शराबी पुलिसवाला है। दिनरात शराब पीना, बदचलन औंरतो से संबंध रखना, रात–रात घर न आना, लोगों को धमकाना, रिश्वत लेना, पत्नी को पिट्ना, गरीब महिलाओं से जबरदस्ती करना, एवं पत्नी को बच्चे पैदा करनेवाली मशीन समझनेवाला है। "गीता तुम हट जाओ यह मेरा बेटा है, और मेरा कुछ नहीं है ? मैं आपकी कुछ भी नहीं हूँ। हो–हो, तुम भी हो, क्या हूँ। बच्चे पैदा करनेवाली मशीन"[7] 'मन के मीत' में इसतरह अपनी पत्नी एवं नारी संबंधी सामासैह के विचार है।

एक दिन झगड़े में गीता के हाथ का डण्डा रामसिंह के सिर में लगता है और रामसिंह की मृत्यु होती है। गीता को अपने ही नाबालिक बेटे की गवाही के कारण तथा अपने पति की हत्यारण के रुप में उम्र कैद होती है। अपने दुध पीते बेटेसे अलग होती है। अपना जीवन जेल में यादों के साथ बिताती है पारिवारिक संघर्ष तथा आंतरिक एवं बाहरी संघर्ष यहाँ द्रष्यव्य होता है.। जेल जीवन संघर्ष से गीता कथन करती है। गीता का पुत्र राजू का जेल में पढ़ना, किशोर सुधार में अपनी शिक्षा पूर्ण कर के माँ से अलग होकर माँ के सपनों को पुर्ण करने के लिए नोकरी की तलाश करता है बेरोजगारी के कारण परेशान होकर आत्महत्या का प्रयास करता है। पश्चात

पाकिटमार एवं चोर बबना अंत में अच्छा आदमी बनना, राजू जीवनभर अपने माता और भाई से अलग होकर कैसे जीता है अपने भाई के लिए पागल गूँगा बनकर बलिदान देता है। मॉं से मिलता हैं किंतु कुछ समय में मॉं मृत्यु के आघोष में चली जाती है यह पारिवारिक संघर्ष शांताकुमार व्दारा चित्रित किया गया है। 'वृंदा' में वृंदा के परिवार अनपड़ एवं देहाती होने के कारण उसके परिवार में स्त्री की पढ़ाई नहीं हुई थी वृंदा पढ़ती है। वृंदा और किशोर लेकर दोनों परिवार में उचनीच अमीरीगरीबी तथा जाति भेद है किशोर को अपने परिवार में माता–पिता के साथ रहकर अपने प्रेम का समर्पन करना तथा वृंदा से अलगाव बनाना, माता पिता को मानवता की बातें किशोर व्दारा बताना, मॉं की बीमारी, पिता का अनैतिक तथा भ्रष्ट व्यवसाय आदि संघर्ष करना पडता है। अंत में बादल फाटने के कारण परिवार अथवा घर का टुटना आदि संघर्ष जाति भेद का संघर्ष आर्थिक है। "मॉं ये सब जातियॉं मनुष्य की बनाई हुई है। भगवान तो सब को बराबर पैदा करता है। वह ईश्वर तो एक है। सभी उसकी संतान है"।[8] वृंदा, किशोर जाति–समाज एवं घर तथा प्रकृती से लढ़ते है, संघर्ष करते हुए चित्रित हुए है।

"कैदी" में राजीव अपनी पत्नी रेखा की इच्छाऍं तथा सारी जरुरते पूर्ण करता है। दिन प्रति दिन रेखा की इच्छाऍं बढ़ती रहती है। वह पडोस के पुरी दाम्पत्य के साथ बराबरी करती है पुरी दाम्पत्य धनवान है। इसकारण राजीव ऋण लेकर रेखा को खुश करता है। एक दिन रेखा के लिए राजीव अपने दप्तर में सुनिल के साथ मिलकर चोरी करते है। सुनिल अपना हिस्सा लेकर उसके गॉंव बंगाल चला जाता है। जाच पडताल होने पर राजीव को सजा मिलती है 7 साल की कैद राजीव जेल में सजा काटता है। अनेक संघर्ष करता है, लेकिन रेखा इधर नीरज के साथ मजा लुटती है। अंत में राजीव को जब पता चलता है तब बह पागल हो जाता है उसे पागलखाने में भर्ती किया जाता है। रेखा को भी पश्चाताप होता है लेकिन तब समय चला जाता है। निरज सारे पैसे लुट लेता है।

"लाजों" में सैनिकों की विधवा का प्रश्न उजागर हुआ है। 'लाजो' के शादी के पश्चात आठ दिन के अंदर उसके पति पाकिस्तान के खिलाफ जंग पर चला जाता है और शहीद होता है। लाजो पर परिवार की जिम्मेदारी आती है उसके सारे सपने मिट्टी में मिल जाते है। "कब विवाह हुआ ? कब दुल्हन बनी कब विधवा ?" उसे कुछ समझ नही आता फिर भी ऐसी कठिन परिस्थितियों में वह अपने ससुर एवं घर का

खयाल रखती है। साथ ही साथ सरकारी अधिकारी खुशहाल का उसके साथ गैरव्यवहार, प्रेम के साथ विवाह के संदर्भ में जाति–पाति भेद, प्रेम को घर से निकाल देना आदि अनेक घटनाओं में संघर्ष द्रष्यव्य होता है।

निष्कर्ष – मानव जीवन में संघर्ष अविभाज्य किया है वास्ताविक रुप से पारिवारिक संघर्ष सामाजिक प्रकिया है। जिसमें दो व्यक्ती या अधिक व्यक्तीसें का समूह अपने अस्तित्व हेतु संघर्षरत। रहता हैं वह संघर्ष अनेक प्रकार का होता हैं। शांताकुमार के उपन्यासों में पारिवारीक संघर्ष के दर्शन प्राप्त होते हैं। जिसमें सावित्री–प्रमोद, गीता, लाजो, वृंदा, प्रमोद, राजू, रेखा–राजीव आदि प्रात्रों के मध्यम से पति–पत्नी संघर्ष, बेरोजगारी, वर्ण भेद, पुत्र की चिंता, संस्कार, नैतिक–अनैतिक, पवित्र प्रेम, स्वालंबन आदि बातों मे पारीवारिक चित्रण स्पष्ट होता है।

निष्कर्ष :–

निष्कर्ष के रुप मे स्पष्ट होता है कि, शांताकुमार के उपन्यासों में पारिवारीक संघर्ष का चित्रण पात्रों के माध्यम से सटिकता पूर्ण किया गया है। जो आज की परिस्थिति में प्रासंगिक एवं समाज का दर्शन प्रतीत होता है।

संदर्भ संकेत सूची

1. 'नालन्दा' विशाल शब्द सागर – श्री. नवलजी पृष्ठ क. 1375
2. 'शोधगंगा' – इंटरनेट
3. 'शोधगंगा' – इंटरनेट
4. 'शोधगंगा' – इंटरनेट
5. नालन्दा विशाल शब्द सागर – श्री नवल जी पृ 802
6. दास बोध – समर्थ रामदास स्वामी
7. 'शांताकुमार समग्र साहित्य खण्ड – 1 संपा. रामकुमार भ्रमर पृष्ठ क. 407
8. 'वृंदा' – ले. शांताकुमार पृष्ठ क. 84